संगोष्ठी आख्या

रजत जयंती समारोह

(24 सितम्बर, 2022–01 अक्टूबर, 2022

उच्च शिक्षा विभाग, उ0प्र0 द्वारा प्रायोजित

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee: An Immortal Herald of Humanity, Nationalism and Politics)

(24–25 सितम्बर, 2022)

आयोजक

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ

आज़ादी का अमृत महोत्सव

महाविद्यालय वेबसाइटः nscbonline.in ईमेलः netajiseminar2022@gmail.com

सेवा में,
शिक्षा निदेशक (उच्च शिक्षा)
डिग्री विकास अनुभाग,
उच्च शिक्षा निदेशालय, उ0प्र0
प्रयागराज।

विषयः रजत जयंती समारोह (24 सितम्बर–01 अक्टूबर, 2022) के अन्तर्गत आयोजित द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, अन्तरमहाविद्यालयीय बैडमिन्टन प्रतियोगिता और साहित्यिक–सांस्कृतिक समागम ''उन्मेष–2022'' की आख्या प्रेषण के सम्बन्ध में।

महोदय,

सादर अवगत कराना है कि वर्ष 1997 में स्थापित यह महाविद्यालय अपनी स्थापना के 25 वर्ष इसी वर्ष 2022 में पूर्ण कर रहा है जिसके उपलक्ष्य में महाविद्यालय ने अपनी गौरवशाली अतीत को सप्त–दिवसीय कार्यक्रमों की श्रृंखला के माध्यम से स्मरण करते हुय द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, अन्तरमहाविद्यालयीय बैडमिन्टन प्रतियोगिता और साहित्यिक–सांस्कृतिक समागम ''उन्मेष–2022'' का आयोजन किया जिसकी विस्तृत आख्या कार्यक्रमवार आपके अवलोकनार्थ प्रेषित है।

रजत जयंती समारोह परिकल्पना

भारतीय संस्कृति की स्वस्थ परम्पराओं से प्रेरित 'भारत रत्न' श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार के कर–कमलों से वर्ष 1997 में अभिसिंचित और भारतीय स्वातंत्र्य–समर के अमर सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नाम से स्थापित नेता जी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ ने वर्ष 2022 में अपनी स्थापना की रजत जयंती समारोह का भव्य आयोजन किया। रजत जयंती के इस गौरवपूर्ण अवसर पर महाविद्यालय ने सप्त–दिवसीय विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला के माध्यम से अपनी अकादमिक, सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा संबंधी सकारात्मक परिवेश को प्रदर्शित किया।

संगोष्ठी विषयवस्तु

रजत जयंती उत्सव की इस श्रृंखला में **दिनांक 24–25 सितंबर, 2022** को भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने एवं उनके राष्ट्रोत्थान व देश कल्याण हेतु अप्रतिम योगदान के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एक **द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी "भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"** विषय पर आनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यम से आयोजित की गयी।

'भारत रत्न' पूज्य अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार भारतीय राजनीति में शुचिता, मानवीयता एवं सहृदयता के कारण सर्वमान्य नेता के रूप में लोकप्रिय रहे। वह राजनीति में नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना एवं लोक–कल्याण को राजनैतिक उपलब्धियों से श्रेयकर मानते थे। वह स्पष्ट संदेश देते हैं कि हम सभी को सर्वप्रथम इन्सान बनना चाहिए, केवल नाम से नहीं, रूप से नहीं, शक्ल से नहीं बल्कि हृदय से, बुद्धि से और ज्ञान से भी। वह सत्ता के सुख के लिए मूल्यहीन तरीके से किसी लाभ के विरूद्ध थे। उनके विरोधी भी उनके राष्ट्रीय मूल्यों और राजनैतिक समन्वयता के मुरीद

थे। वह संसद में गंभीर से गंभीर बात को काव्यात्मक तरीके से अभिव्यक्त कर देते थे जिससे विपक्षी दल भी उनके विचारों को गंभीरता से लेते थे। वह इस बात के हिमायती थे कि आदमी की पहचान उसके धन या पद से नहीं होती।

आदरणीय अटल जी अपने भाषण कौशल, हिन्दी भाषा मर्मज्ञता एवं काव्य हृदय के लिए भी विख्यात थे। संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुये उनका हिन्दी में भाषण देना, भारत को परमाणुशक्ति संपन्न राष्ट्र बनाना, पाकिस्तान के साथ संबंधों को सुधारने की पहल करना, कारगिल युद्ध के दौरान भारतीय सेना का खुलकर समर्थन करना, स्वर्णिम चतुर्भुज योजना का विकास करना आदि पूज्य अटल जी को भारतीय जन–मानस के मध्य एक विचारशील राष्ट्रवादी जन नेता के रूप में स्थापित करते हैं। आदरणीय अटल जी भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे। वह भारतीय जनता पार्टी को आधारशिला से उठाकर गगनचुंबी उपलब्धियों के शिखर तक ले जाने वाले कर्मशील नेता के रूप में भी उभरे। वह तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे। उन्होंने लम्बे समय तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ी हुई पत्रिकाओं राष्ट्रधर्म, पान्चजन्य आदि राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत अन्य पत्र–पत्रिकाओं का संपादन भी किया। वह एक लोकप्रिय हिन्दी कवि, लोकसमर्पित पत्रकार और प्रखर वक्ता भी थे। ऐसे मानवता, राष्ट्रवाद और राजनीति के अग्रणी और कालजयी अग्रदूत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से महाविद्यालय के रजत जयंती के अवसर पर हमने श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी की विषयवस्तु को बहुआयामी और बहुविषयक बनाने हेतु विभिन्न उपविषयों पर शोधपत्र सारांश व पूर्ण शोध–पत्र आमंत्रित किये गये जिसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों के 150 से अधिक शिक्षकों एवं शोधार्थियों द्वारा अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। **"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"** विषय पर केन्द्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उपविषय निम्नवत थे :

1. पूज्य अटल बिहारी वाजपेयी तथा राष्ट्र की अवधारणाः वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं चुनौतियां
2. कर्म से समाधि तक की आत्म यात्रा : भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी
3. भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
4. प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी का योगदान
5. अटल जी की राजनीतिक जीवन की उपलब्धियाँ
6. राजनीति, राष्ट्रप्रेम एवं कविता : भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी
7. राजनीति एवं मानववाद : भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी
8. युवा अटल मानस से विश्व–फलक तक विस्तारः भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी
9. हिन्दी कविता एवं अटल बिहारी वाजपेयी
10. अटल बिहारी वाजपेयी का काव्य संसार
11. राष्ट्रप्रेम, कविता एवं अटल बिहारी वाजपेयी
12. पत्रकारिता एवं अटल बिहारी वाजपेयी
13. राष्ट्रधर्म, पा०चजन्य, वीर अर्जुन एवं अटल बिहारी वाजपेयी
14. हिन्दू धर्म एवं अटल विहारी वाजपेयी
15. आतंकवाद एवं वर्तमान चुनौतियाँ अटल जी
16. इतिहास, संविधान एवं अटल जी
17. भारतीय संसद एवं अटल बिहारी वाजपेयी
18. लखनऊ एवं अटल बिहार वाजपेयी
19. ग्वालियर एवं अटल बिहारी वाजपेयी

20. अटल जी की राजनीतिक यात्राः कही अनकही
21. भारतीय राजनीति में अटल बिहारी वाजपेयी
22. डॉ. श्यामा प्रसाद एवं अटल जी
23. पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं अटल जी
24. भारतीय परमाणु परीक्षण एवं अटल जी
25. भारतीय विदेश नीति एवं अटल जी
26. भारत–पाकिस्तान संबंध व अटल बिहारी जी
27. राष्ट्रीय स्वयं संघ एवं अटल जी
28. संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अटल जी
29. भारतीय जनसंघ एवं अटल जी
30. भारतीय जनता पार्टी एवं अटल जी
31. राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन एवं अटल जी
32. कारगिल युद्ध एवं अटल जी
33. रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया की मौद्रिक नीति एवं वर्तमान प्रासंगिकता
34. भारतीय अर्थव्यवस्था और अटल जी का आर्थिक चिंतन
35. स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना एवं अटल जी
36. हिंदू तन–मन, हिंदू जीवन, रग–रग हिंदू मेरा परिचय
37. राजनीति, समाज एवं राष्ट्र
38. गठबंधन राजनीति एवं अटल
39. राष्ट्रीय समीकरण व अटल जी
40. बाबरी मस्जिद विध्वंस व अटल जी
41. कंधार प्लेन हाइजैक व अटल जी
42. छात्र–राजनीति एवं अटल जी
43. शक्ति से शांतिः अटल बिहारी वाजपेयी
44. भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः क्या खोया, क्या पाया
45. न दैन्यं न पलायनः अटल बिहारी वाजपेयी
46. अटल और आत्मनिर्भर भारत

उक्त संगोष्ठी में अटल जी के जीवन व उनके कृतित्व पर विचार–विमर्श करने हेतु 04 तकनीकी सत्रों के साथ–साथ 01 ऑनलाइन शोधपत्र प्रस्तुतीकरण सत्र, उद्घाटन व समापन सत्रों का भी संचालन ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से किया गया जिसके माध्यम से न केवल आदरणीय अटल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के ही बारे में नही वरन भारत की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व आर्थिक बिन्दुओं की भी स्पष्ट जानकारी मिलती है। संपन्न हुए राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वारा निम्नवत उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता मिलीः–

1. प्रस्तावित संगोष्ठी के माध्यम से महाविद्यालय प्रबुद्ध जन, अकादमिक वर्ग, शोधार्थियों व छात्र–छात्राओं को पूज्य अटल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर वृहद विचार–विमर्श करने के लिए एक बौधिक मंच प्रदान किया गया।
2. भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी के व्यक्तित्व पर विचार–विमर्श किया गया।
3. आदरणीय अटल जी के राजनैतिक जीवन के विभिन्न पड़ावों को समझा गया ।
4. मानव कल्याण हेतु पूज्य अटल जी के विचारों से परिचित हुआ गया।
5. कवि ह्रदय आदरणीय अटल जी के हिंदी के प्रति लगाव और काव्य रचना संसार को चर्चा की गयी।
6. राजनीति और कविता के अंतर्संबंध को समझा गया।

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24–25 सितम्बर, 2022)

विस्तृत आख्या

उद्घाटन सत्र

दिनांकः 24.09.2022

समयः 10:00–01:30 बजे

मंच संचालनः
डॉ0 शालिनी श्रीवास्तव
डॉ0 श्वेता भारद्वाज

मुख्य अतिथि	**श्री योगेन्द्र उपाध्याय, मा0 मंत्री, उच्च शिक्षा, उत्तर प्रदेश सरकार, उ0प्र0**
विशिष्ट अतिथि	डॉ0 नीरज बोरा, विधायक, लखनऊ उत्तर और समाजसेवी शिक्षाविद
विशिष्ट अतिथि	**प्रो0 आलोक कुमार राय, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय**
विशिष्ट अतिथि	प्रो0 मनोरमा सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू, लखनऊ
मुख्य वक्ता	**प्रो0 विजय कर्ण, विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग, नव–नालंदा विश्वविद्यालय, बिहार**
प्राचार्य	प्रो0 अनुराधा तिवारी
संयोजक	**डॉ0 राजीव यादव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर–अंग्रेजी**
आयोजन सचिव	डॉ0 जय प्रकाश वर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर–अर्थशास्त्र

किसी भी राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र कार्यक्रम की रूपरेखा और उसके सफल होने के मानदंडों की पृष्ठभूमि तैयार करता है। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो0 अनुराधा तिवारी के कुशल नेतृत्व में द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में श्रद्धेय अटल जी के व्यक्तित्व पर चर्चा करने के लिए देश के मूर्धन्य विद्वानों, शिक्षाविदों, शोधकर्तायों और शिक्षकों के मध्य अटल जी का सान्निध्य प्राप्त करने वाले और शिक्षा व समाज सेवा के माध्यम से मानव जीवन में सार्थक परिवर्तन करने वाले विचारकों और चिंतकों ने अटल जी की कार्य–शैली, आम लोगों के प्रति लगाव और सिद्धांतों को सर्वोपरि रखने की उनकी दृढ़प्रतिज्ञता पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर उद्घाटन सत्र के प्रारंभ में ज्ञान दायिनी माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यापर्ण कर और दीप प्रज्जवलन कर अतिथियों द्वारा श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। तदुपरांत **प्राचार्य प्रो0 अनुराधा तिवारी** ने अतिथियों का स्वागत करते हुये श्रद्धेय अटल जी के साथ बिताये गये अपने अनुभवों को सांझा किया गया। उन्होंने महाविद्यालय की शीलान्यास के समय का जिक्र करते हुये अटल जी के साथ अपने अनुभव के बारे में बताते हुये कहा कि अटल जी जैसा सहज, सरल और अपनत्व भाव वाला व्यक्ति राजनीति में मिल पाना सम्भव नही है, वह हमारी स्मृतियों में सदैव जीवित रहेंगे। राष्ट्रीय संगोष्ठी के **संयोजक डॉ0 राजीव यादव** द्वारा संगोष्ठी की विषयवस्तु और अटल जी के विचारों व कार्यों की वर्तमान प्रासंगिकता से सभा कक्ष में उपस्तिथ सभी सम्मानित अतिथियों और आगंतुकों से परिचय कराया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में अटल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित एक पुस्तिका **"हमारे अटल : मानववाद, राष्ट्रप्रेम और राजनीति के कालजयी अग्रदूत"** और संगोष्ठी ई–स्मारिका का विमोचन गणमान्य अतिथियों के कर–कमलों से किया गया जिसके माध्यम से अटल जी द्वारा किये गये राष्ट्र कल्याण के कार्यों से आम जनमानस से परिचय कराया गया। उद्घाटन सत्र के **मुख्य वक्ता प्रो0 विजय कर्ण, विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग, नव–नालंदा विश्वविद्यालय, बिहार** व ट्रस्टी, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ ने विस्तार से अटल जी के महान

व्यक्तित्व को बड़ी सहजता से उद्धृत किया और उन्हें भारतीय राजनीति, संस्कृति और सभ्यता का सशक्त पोषक बताया। **विशिष्ट अतिथि डॉ0 नीरज बोरा, विधायक, लखनऊ उत्तर और समाजसेवी शिक्षाविद** ने अटल जी द्वारा लखनऊ में शिक्षा के विस्तार में किये गये कार्यों की चर्चा की। तदोपरांत अन्य **विशिष्ट अतिथि प्रो0 आलोक कुमार राय, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय** ने नयी शिक्षा नीति–2020 का उल्लेख करते हुए अटल जी को समावेशी शिक्षा पद्धति का जनक बताया और भारतीय भाषा, संस्कृति और ज्ञान परम्परायों का उत्कृष्ठतम विचारक बताया। मंच पर विराजमान अन्य **विशिष्ट अतिथि प्रो0 मनोरमा सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू, लखनऊ** ने शिक्षा के गुणात्मक संवर्धन में अटल जी के योगदान को रेखांकित किया। मंच पर विराजमान एक अन्य **विशिष्ट अतिथि डॉ0 विनीत कुमार श्रीवास्तव, निदेशक, अर्थशास्त्र और नीति अनुसंधान विभाग, आर0बी0आई0, मुम्बई** ने भारत के अर्थव्यवस्था में भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका को स्पष्ट किया तथा प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना और सर्व शिक्षा अभियान जैसे अर्थव्यवस्था में बुनियादी ढांचे और निवेश को बढ़ावा देने के लिए स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उठाए गए उपायों पर जोर दिया। उद्घाटन सत्र के **मुख्य अतिथि श्री योगेन्द्र उपाध्याय, मा0 मंत्री, उच्च शिक्षा, उत्तर प्रदेश सरकार, उ0प्र0** ने अटल जी के सान्निध्य में बिताये पलों को स्मरण करते हुए उन्हें भारतीय राजनीति के कालजयी राजनेता और मानवतावादी विचारक के रूप में परिचित कराया। उनकी वाकपटुता, संवेदनशील व्यवहार, मानवीय आतिथ्य और काव्य–प्रवणता का विशेष उल्लेख किया। सत्र के अंत में संगोष्ठी के **आयोजन सचिव डॉ0 जय प्रकाश वर्मा** ने सभाकक्ष में उपस्तिथ समस्त अतिथियों, गणमान्य व्यक्तियों, प्रतिभागियों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों, छात्र–छात्रायों और प्रत्रकार बंधुयों के प्रति आभार व्यक्त किया। उद्घाटन सत्र में महाविद्यालय के सेवानिवृत प्राचार्यों और प्राध्यापकों को महाविद्यालय की रजत जयंती समारोह के अवसर पर महाविद्यालय के विकास में उनके योगदान को याद करते हुए सम्मानित किया गया। उद्घाटन सत्र में मंच का कुशल संचालन **डॉ0 शालिनी श्रीवास्तव** और **डॉ0 श्वेता भारद्वाज** किया गया।

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24–25 सितम्बर, 2022)

प्रथम तकनीकी सत्र

दिनांकः 24.09.2022

समयः 02:00–03:30 बजे

उपविषय **"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी और सामाजिक–आर्थिक मानवीय मूल्य"**

मंच संचालनः
डॉ0 मीनाक्षी शुक्ला
डॉ0 राहुल पटेल

अध्यक्ष	**प्रो0 मनोज अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय**
उपाध्यक्ष	डॉ0 सनोबर हैदर, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ
मुख्य वक्ता	**डॉ0 विनीत कुमार श्रीवास्तव, निदेशक, अर्थशास्त्र और नीति अनुसंधान विभाग, आर0बी0आई0, मुम्बई**
प्रतिवेदक	डॉ0 अर्चना सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, आर0एम0पी0 पी0जी0 कॉलेज, सीतापुर

प्रथम तकनीकी सत्र का आयोजन संगोष्ठी के उपविषय **"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी और सामाजिक–आर्थिक मानवीय मूल्य"** पर किया गया जिसमें 21 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस सत्र की **अध्यक्षता प्रो0 मनोज अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय** ने किया और अटल जी को भारतीय आर्थिक सुधारों और संरचनात्मक विकास को नवीन दिशा दिखाने वाला बताया। **उपाध्यक्षता कर रही डॉ0 सनोबर हैदर, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ** ने विषय पर अपनी बात रखते हुये अटल जी को युगदृष्टा राजनेता, भारतीय इतिहास व संस्कृति की समझ रखने वाला जननेता बताया। डॉ0 मीनाक्षी शुक्ला द्वारा गणमान्य व्यक्तियों के संक्षिप्त परिचय के बाद सत्र के अध्यक्ष प्रो मनोज अग्रवाल ने सत्र के **मुख्य वक्ता डॉ0 विनीत कुमार श्रीवास्तव, निदेशक, अर्थशास्त्र और नीति अनुसंधान विभाग, आर0बी0आई0, मुम्बई** को भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों के एक गहन शोधकर्ता और नीति विशेषज्ञ के रूप में पेश किया। उन्होंने कहा कि महामारी के दौरान किए गए नीतिगत उपायों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप और चीन जैसी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के बीच एक लचीली अर्थव्यवस्था बना दिया है। उन्होंने आगे कहा कि महामारी के बाद की अवधि में डॉ0 श्रीवास्तव से बेहतर अर्थव्यवस्था की तस्वीर कोई पेश नहीं कर सकता है। इसके बाद डॉ0 श्रीवास्तव ने कॉलेज की आयोजन टीम को इस तरह के शानदार आयोजन के लिए बधाई देते हुए अपने व्याख्यान की शुरुआत की। एक केंद्रीय बैंकर के रूप में उन्होंने बताया कि सरकार का मुख्य लक्ष्य स्वास्थ्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना है। आर्थिक सुरक्षा का दायरा आर0बी0आई0 के दायरे में आता है। वर्तमान में, दुनिया दो संकटों से गुजर रही है, एक है– महामारी के बाद की जटिलताएं और दूसरी है– रूस–यूक्रेन युद्ध। महामारी से उत्पन्न संकट से निपटने के लिए अधिकांश देशों ने पहले चरण में दो तरीकों को अपनाया– उन्होंने अर्थव्यवस्था में भारी मात्रा में तरलता का इंजेक्शन लगाया और दूसरे चरण में जब कीमतें तेजी से बढ़ने लगीं तो उन्होंने तरलता वापस ले

ली। इस तदर्थ दृष्टिकोण ने उच्च मुद्रास्फीति के साथ कम विकास का उत्पादन किया। इसके विपरीत भारत द्वारा किए गए उपायों को अच्छी तरह से सोचा गया था जिसमें उसने अपने तरलता इंजेक्शन को नियंत्रित किया था। इसका परिणाम यह है कि आज भारत न्यूनतम मुद्रास्फीति के साथ दुनिया की सबसे अधिक बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है। विभिन्न स्लाइडों की मदद से उन्होंने आरबीआई की स्थापना के बाद से विकास को प्रस्तुत किया और देश की आवश्यकता के अनुसार इसके बदलते लक्ष्य जैसे कि स्वतंत्रता के बाद की अवधि जब अर्थव्यवस्था का तेजी से मुद्रीकरण करने की आवश्यकता थी, दूसरे चरण में इसने भारत–चीन और ब्रेटन–वुड्स संकट और 1973 के तेल संकट के साथ भारत–पाक युद्ध। उन्होंने इसे मौद्रिक लक्ष्यीकरण दृष्टिकोण कहा। यह चरण तेजी से बढ़ रही मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए था। अगले चरण के दौरान स्थिरता के साथ विकास का लक्ष्य प्रबल रहा। इसे बहु लक्ष्य दृष्टिकोण कहा जाता था। अगला चरण 2016 में लचीला मुद्रास्फीति लक्ष्य की शुरुआत के साथ शुरू हुआ जिसमें मुद्रास्फीति को 2–6 प्रतिशत के दायरे में रखना अनिवार्य है। नियंत्रित मुद्रास्फीति के साथ उच्च विकास के लक्ष्य को बनाए रखने के लिए यह दृष्टिकोण काफी अच्छा काम कर रहा है। हालांकि, उन्होंने कहा कि मुद्रास्फीति के दो मुख्य घटक हैं यानी खाद्य और कच्चा तेल, जो कमोबेश आरबीआई के नियंत्रण से बाहर हैं। हाल की मुद्रास्फीति ज्यादातर इन दो घटकों के कारण होती है। इस सूचनात्मक व्याख्यान के बाद प्रश्न–उत्तर सत्र का आयोजन किया गया। पहला सवाल यह था कि क्यों मौद्रिक नीतियां और राजकोषीय नीतियां मुद्रास्फीति को सीमा के भीतर रखने में असमर्थ हैं? इसके उत्तर में डॉ0 श्रीवास्तव ने उत्तर दिया कि राजकोषीय नीतियां मुख्य रूप से उत्पादन पक्ष से संबंधित हैं और मौद्रिक नीतियां मांग पक्ष से संबंधित हैं। कभी–कभी विभिन्न बाहरी झटकों के कारण वास्तविक उत्पादन संभावित उत्पादन से नीचे रहता है। यह मुद्रास्फीति का कारण बनता है जैसा कि वर्तमान स्थिति में हो रहा है। दूसरा सवाल उन अफवाहों को लेकर था कि क्या वित्त मंत्रालय और आरबीआई के बीच कोई तनातनी है। डॉ0 श्रीवास्तव ने इसका पूरी तरह से खंडन किया और उन क्षणों को याद किया जब हमारे वित्त मंत्री व्यक्तिगत रूप से महामारी के दौरान आने वाली स्थिति की निगरानी कर रहे थे। अगले प्रतिभागी ने गिरती विनिमय दर भंडार और मंदी की आशंकाओं के बारे में प्रश्न किया। डॉ0 श्रीवास्तव ने समझाया कि अर्थव्यवस्था में अब तक मंदी के कोई संकेतक नहीं हैं और विदेशी मुद्रा भंडार को प्रतिकूल अंतरराष्ट्रीय संकट से निपटने के लिए रखा जाना चाहिए जैसा कि हम वर्तमान समय में देख रहे हैं। व्याख्यान के अगले चरण में डॉ मनोज अग्रवाल ने डॉ विनीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा दिए गए व्याख्यान का सारांश दिया। इस प्रकार सत्र के मुख्य वक्ता डॉ0 विनीत कुमार श्रीवास्तव ने विस्तार से भारत के अर्थव्यवस्था में भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका को स्पष्ट किया तथा प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना और सर्व शिक्षा अभियान जैसे अर्थव्यवस्था में बुनियादी ढांचे और निवेश को बढ़ावा देने के लिए स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उठाए गए उपायों पर जोर दिया। इस सत्र की **प्रतिवेदक की भूमिका में डॉ0 अर्चना सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, आर0एम0पी0 पी0जी0 कॉलेज, सीतापुर** रहीं जिन्होंने सत्र के अन्त में आख्या प्रस्तुत की। इस सत्र में मंच का संचालन **डॉ0 मीनाक्षी शुक्ला** और **धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 राहुल पटेल** द्वारा किया गया।

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

''भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत''

(24–25 सितम्बर, 2022)

द्वितीय तकनीकी सत्र

दिनांकः 24.09.2022

समयः 03:00–05:00 बजे

उपविषय **''राष्ट्र की अवधारणा और वर्तमान संदर्भ''**

मंच संचालनः
डॉ0 पूनम वर्मा
डॉ0 अरविन्द

अध्यक्ष	**प्रो0 बृजेन्द्र पाण्डेय, राजनीति विमाग, विद्यान्त पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ**
उपाध्यक्ष	प्रो0 दीपक कुमार सिंह, अंग्रेजी विभाग, डी0ए0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ
मुख्य वक्ता	**डॉ0 शिखा चौहान, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय**
प्रतिवेदक	डॉ0 स्नेहलता शुक्ला, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, एस0बी0जी0सी0 कॉलेज, लखनऊ

द्वितीय तकनीकी सत्र का आयोजन संगोष्ठी के उपविषय **''राष्ट्र की अवधारणा और वर्तमान संदर्भ''** पर किया गया जिसमें 20 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये। सत्र का **संचालन डॉ0 पूनम वर्मा** द्वारा सभी वक्ताओं का परिचय एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए प्रारम्भ किया गया। इस सत्र की **अध्यक्षता प्रो0 बृजेन्द्र पाण्डेय, राजनीति विमाग, विद्यान्त पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ** द्वारा की गई जिन्होंने राष्ट्रवाद के विचार को भौगोलिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक सन्दर्भों के माध्यम समझाने का सार्थक प्रयास किया। प्रो0 बृजेंद्र पाण्डेय अध्यक्ष द्वारा राष्ट्रवाद के विषय पर चर्चा करते हुए शिक्षा के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि किस प्रकार शिक्षा आत्मज्ञान को सुपात्र करने की कला एवं व्यक्ति के नैतिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास करने में सहयोगकारी सिद्ध होती है पर प्रकाश डाला। सत्र के **उपाध्यक्ष प्रो0 दीपक कुमार सिंह, अंग्रेजी विभाग, डी0ए0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ** द्वारा नई शिक्षा नीति–2020 के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पक्षों पर विस्तार से चर्चा करते हुये इसके नकारात्मक पक्ष पर सुधार करने की सलाह दी। मुख्य वक्ता डॉ0 शिखा चौहान, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ने अटल जी के बहुआयामी व्यक्तित्व को चित्रित करते हुये उनके द्वारा किये गये विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यों को नवीन दृष्टिकोण से देखने की सलाह दी। **मुख्य वक्ता डॉ0 शिखा चौहान, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय** के वक्तव्य की शुरुआत अटल जी के प्रसिद्ध कविता ''दुनिया का इतिहास पूछता, रोम कहां यूनान कहां'' द्वारा उद्बोधन करते हुए उनके राजनीतिक कार्यकाल में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों जैसे पोखरण द्वितीय के सफल परमाणु परीक्षण, भारत–पाकिस्तान व चाइना के साथ राजनयिक संबंध में लिए गए दूरगामी प्रभाव वाले विदेश नीति एवं आर्थिक नीति के एलपीजी के बहुआयामी प्रभाव के पक्षधर रहने वाले एवं वर्तमान में लागू मिशन इंद्रधनुष की रूपरेखा की देन के रूप में अटल जी के मुखर वक्ता, संवेदनशील व्यक्तित्व एवं उनके मानवीय गुणों की चर्चा की। इस सत्र की **प्रतिवेदक की भूमिका में डॉ0 स्नेहलता शुक्ला, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, एस0बी0जी0सी0 कॉलेज, लखनऊ** ने सत्र के अन्त में आख्या प्रस्तुत की। इस सत्र में मंच का संचालन डॉ0 पूनम वर्मा और धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 अरविन्द द्वारा किया गया।

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24–25 सितम्बर, 2022)

तृतीय तकनीकी सत्र

दिनांकः 25.09.2022

समयः 10:00–11:30 बजे

उपविषय **"आदरणीय अटल जी भारतीय राजनीति एवं वैज्ञानिक उत्थान में योगदान"**

मंच संचालनः

डॉ0 राघवेन्द्र प्रताप नारायण

डॉ0 उषा मिश्रा

अध्यक्ष	**प्रो0 मंजुला उपाध्याय, प्राचार्य, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ**
उपाध्यक्ष	डॉ0 सत्यकेतु, संस्कृत व प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
मुख्य वक्ता	**डॉ0 शरद कुमार वैश्य, एसोसिएट प्रोफेसर, एन0एस0सी0बी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ**
	डॉ0 जान्हवी ओझा, असिस्टेंट प्रोफेसर, कालिन्दी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
	डॉ0 आलोक सिंह, शहीद राजगुरु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
प्रतिवेदक	डॉ0 दिव्या पाल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, नारी शिक्षा निकेतन, लखनऊ

तृतीय तकनीकी सत्र का आयोजन संगोष्ठी के उपविषय **"आदरणीय अटल जी भारतीय राजनीति एवं वैज्ञानिक उत्थान में योगदान"** पर किया गया जिसमें 20 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र की **अध्यक्षता प्रो0 मंजुला उपाध्याय, प्राचार्य, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ** द्वारा की गई जिन्होंने अटल जी द्वारा भारतीय राजनीति में शुचिता व राष्ट्रवाद को सर्वश्रेष्ठ मूल्य के रूप में स्थापित करने के लिये उनकी प्रशंसा की। सत्र के **उपाध्यक्ष डॉ0 सत्यकेतु, संस्कृत व प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय** द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा में उल्लिखित राष्ट्र की परिकल्पना को वर्तमान सन्दर्भों से जोड़ते हुये वर्तमान समय में अटल जी के राजनीतिक आदर्शों की प्रासंगिकता को चिन्हित किया। प्रथम **मुख्य वक्ता डॉ0 शरद कुमार वैश्य, एसोसिएट प्रोफेसर, एन0एस0सी0बी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ** द्वारा अटल जी के जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में किये गये सराहनीय कार्यों जैसे– पोखरण परीक्षण द्वितीय, सूचना एवं तकनीकी क्षेत्र में किए गए सुधार, निजीकरण, चंद्रयान मिशन, राफेल डील विषयों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने यह भी बताया कि अटल जी द्वारा 11 मई को राष्ट्रीय तकनीकि दिवस घोषित किया गया था। उनके शासन काल में नई विज्ञान एवं तकनीकि नीति–2003 में लाई गई थी। साथ ही अन्य **विशिष्ट वक्ताओं डॉ0 जान्हवी ओझा, असिस्टेंट प्रोफेसर, कालिन्दी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय** एवं **डॉ0 आलोक सिंह, शहीद राजगुरु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय** द्वारा अटल जी के तरुण अवस्था से लेकर प्रधानमंत्री बनने तक के राजनीतिक सफर एवं उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिचित कराया और बताया कि अटल जी यह मानते थे कि राष्ट्र की प्रगति के लिए तकनीक का लैब से लैंड तक पहुंचना आवश्यक है। अटल जी की कविताओं कदम मिलाकर चलना होगा, हिंदू तन–मनका पाठ किया गया। इसके साथ सुभाष चंद्र बोस जी के व्यक्तित्व के बारे में की वह ऐसे पहले राजनेता थे जिन्होंने पहली बार सेना में रानी लक्ष्मी बाई रेजीमेंट बनाया था। इस सत्र की प्रतिवेदक की भूमिका में **डॉ0 दिव्या पाल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, नारी शिक्षा निकेतन, लखनऊ** ने सत्र के अन्त में आख्या प्रस्तुत की। इस सत्र में मंच का संचालन **डॉ0 राघवेन्द्र प्रताप नारायण** और **धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 उषा मिश्रा** द्वारा किया गया।

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24–25 सितम्बर, 2022)

चतुर्थ तकनीकी सत्र

दिनांकः 25.09.2022

समयः 11:30–01:00 बजे

उपविषय **"भारत का साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक चितंन और आदरणीय अटल जी"**

मंच संचालनः

डॉ0 पारूल मिश्रा

डॉ0 विशाल प्रताप सिंह

अध्यक्ष	**प्रो0 सी0एस0 वर्मा, गिरि इंस्टिटयूट ऑफ डेवलपमेन्ट स्टडीज, लखनऊ**
उपाध्यक्ष	डॉ0 उमा सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ
मुख्य वक्ता	**डॉ0 हर्ष मणि सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, आई0एस0पी0जी0 कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज**
	डॉ0 राघवेन्द्र मिश्रा असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ
प्रतिवेदक	**डॉ0 विष्णु मिश्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, इन्दिरा गांधी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उन्नाव**

चतुर्थ तकनीकी सत्र का आयोजन संगोष्ठी के उपविषय **"भारत का साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक चितंन और आदरणीय अटल जी"** पर किया गया जिसमें 15 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र की **अध्यक्षता प्रो0 सी0एस0 वर्मा, गिरि इंस्टिटयूट ऑफ डेवलपमेन्ट स्टडीज, लखनऊ** द्वारा की गई जिन्होंने अटल जी द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था के उन्नयन हेतु उठाये गये कदमों का वर्तमान सन्दर्भ में मूल्यांकन किया। सत्र की **उपाध्यक्ष डॉ0 उमा सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ** द्वारा अटल जी की कविताओं का उल्लेख करते हुये उनके राष्ट्रप्रेम और मानवीय मूल्यों की श्रेष्ठता उल्लेख किया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि अटल जी अपनी कविताओं का विस्तार बहुआयामी तरीके से करते हैं जिसमें वह परिस्थितियों का सम्यक मूल्यांकन करते जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं, उनके लिये राष्ट्रहित सर्वोपरि था जिसके लिए उन्होंने राजनीति का रास्ता चुना था, वह भाव सदैव उनकी कविताओं में दिखता है। प्रथम **मुख्य वक्ता डॉ0 हर्ष मणि सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, आई0एस0पी0जी0 कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज** द्वारा अटल जी की विभिन्न कविताओं का उल्लेख करते हुये उनकी व्यवहारिक समझ और व्यंग शैली पर विस्तार से चर्चा की। साथ ही सत्र के अन्य **विशिष्ट वक्ता डॉ0 राघवेन्द्र मिश्रा असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ** द्वारा अटल जी के काव्य संसार पर प्रकाश डालते हुये राजनीति व कविता के मध्य संतुलन स्थापित करने के उनक कौशल की प्रशंसा की। इस सत्र की **प्रतिवेदक** की भूमिका में **डॉ0 विष्णु मिश्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, इन्दिरा गांधी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उन्नाव** ने सत्र के अन्त में आख्या प्रस्तुत की। इस सत्र में मंच का संचालन **डॉ0 पारूल मिश्रा और धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 विशाल प्रताप सिंह** द्वारा किया गया।

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24–25 सितम्बर, 2022)

ऑनलाइन शोध पत्र प्रस्तुति सत्र

दिनांकः 25.09.2022

समयः 10:00–01:00 बजे

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

ऑनलाइन संचालनः
डॉ0 अरविन्द

अध्यक्ष — **प्रो0 अनुराधा तिवारी, प्राचार्य, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ**

उपाध्यक्ष — डॉ0 राजीव यादव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगंज, लखनऊ

देशभर के विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों से ऑनलाइन शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले प्रतिभागियों को व्यापक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से एक ऑनलाइन शोधपत्र प्रस्तुतिकरण तकनीकी सत्र का आयोजन संगोष्ठी के विभिन्न उपविषयों पर अपने विचार व्यक्त करने के लिये महाविद्यालय के **प्राचार्य प्रो0 अनुराधा तिवारी की अध्यक्षता** में किया गया जिसमें 30 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र में मंच का संचालन **डॉ0 अरविन्द** और **धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 राजीव यादव** द्वारा किया गया। **शोधार्थी मुनेश कुमार** ने अपने शोध–पत्र के माध्यम से बताया कि अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व महज उनके राजनीतिक नेतृत्वकर्ता होने तक सीमित नहीं था बल्कि वे एक ओजस्वी कवि, प्रांजल वक्ता, सहृदय व्यक्तिव एवं राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय मुद्दों के गंभीर जानकार व विराट व्यक्तित्व हैं। अटल बिहारी वाजपेयी की वैचारिक उपस्थिति भी उतनी ही सशक्त और महनीय है जितना उनका राजनीतिक नेतृत्वकर्ता के रूप में अवदान। **प्रो0 मीना कुमारी, समाजशास्त्र, कालीचरण पी0जी0 कालेज, लखनऊ** ने अपने शोध पत्र में अटल जी के राजनीतिक जीवन पर प्रकाश डाला। **डा0 मनोज कुमार पाण्डेय, मैकूलाल महाविद्यालय, लखनऊ** ने अपने शोध पत्र में अटल जी के व्यक्तित्व व कृतित्व को नये आयाम के साथ प्रस्तुत किया। **शोधार्थी हेमप्रिया,** अवध विश्वविद्यालय ने अपने शोध पत्र "कर्म से समाधि तक की आत्म यात्रा : भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी" के द्वारा अटल जी के भारतीय जनमानस पर व्यापक प्रभाव पर विचार प्रस्तुत किया। **डॉ0 देवेन्द्र कुमार पाण्डेय, गांधी स्मारक पी0जी0 कालेज, आजमगढ़** आधुनिक भारत के निर्माण में अटल जी के योगदान पर चर्चा की। **डॉ0 अलका द्विवेदी, कालीचरण पी0जी0 कालेज, लखनऊ** ने अपने शोध पत्र में महिला सशक्तिकरण और स्त्री शिक्षा के विस्तार में अटल जी के योगदान पर अपनी बात रखी। **श्री चन्द्रमनि राय, शोधार्थी, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा** ने सामाजिक न्याय व लोकतन्त्र के विशेष सन्दर्भ में अटल जी के आधिकारिक व्यक्तव्यों का विश्लेषण किया। **डॉ0 उषा देवी वर्मा, वी0एम0एल0जी0 कालेज, गाजियाबाद** ने राष्ट्रवाद के सन्दर्भ में अटल जी के विचारों का विश्लेषण किया। इसप्रकार यह सत्र अत्याधिक सार्थक रहा।

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24–25 सितम्बर, 2022)

समापन सत्र

दिनांकः 25.09.2022

समयः 2:00–5:00 बजे

मंच संचालनः
डॉ0 रश्मि अग्रवाल
डॉ0 रोशिनी सिंह

मुख्य अतिथि	**श्री महेंद्र सिंह, पूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, उ0प्र0 व मा0 सदस्य, विधान परिषद, उ0प्र0**
विशिष्ट अतिथि	श्री घनश्याम शाही, मुख्य सचेतक, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
विशिष्ट अतिथि	**प्रो0 विजय कर्ण, विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग, नव–नालंदा विश्वविद्यालय, बिहार**
प्राचार्य	प्रो0 अनुराधा तिवारी
संयोजक	**डॉ0 राजीव यादव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर–अंग्रेजी**
आयोजन सचिव	डॉ0 जय प्रकाश वर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर–अर्थशास्त्र

किसी भी राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन सत्र कार्यक्रम की सफलता का द्योतक होता है। द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र का **संचालन डॉ0 रश्मि अग्रवाल** द्वारा सभी गणमान्य अतिथियों और वक्ताओं का परिचय एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुये किया गया। तदुपरांत **प्राचार्य प्रो0 अनुराधा तिवारी** ने अतिथियों का स्वागत करते हुये पूर्व में विचार व्यक्त करने वाले वक्तायों के सम्बन्ध में अवगत कराया और संगोष्ठी के दौरान हुए सार्थक अनुभवों से परिचित कराया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के **आयोजन सचिव डॉ0 जय प्रकाश वर्मा** द्वारा संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में हुये व्याख्यानों की आख्या प्रस्तुत की गयी। उद्घाटन सत्र के **विशिष्ट अतिथि श्री घनश्याम शाही, मुख्य सचेतक, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद** ने अटल जी के राष्ट्रप्रेम पर अपनी बात रखते हुए उन्हें एक लोकप्रिय जननायक बताया। उद्घाटन सत्र के **मुख्य अतिथि श्री महेंद्र सिंह, पूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, उ0प्र0 व मा0 सदस्य, विधान परिषद, उ0प्र0** ने अटल जी को अद्भुत करिश्मायी राजनेता बताते हुए भारतीय राजनीति को नयी दिशा और दशा देने वाला सबसे प्रभावशाली विचारक घोषित किया और अटल जी के द्वारा किये गये कार्यों के एक अंश भी कर लेने को बड़ी उपलब्धि मानने के लिए प्रेरित किया। **विशिष्ट वक्ता प्रो0 विजय कर्ण** ने पं0 दीन दयाल उपाध्याय और अटल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व की तुलना करते हुए अटल जी को दीन दयाल जी का सच्चा अनुयायी बताया। भाउराव देवरस सेवा न्यास द्वारा अतिथियों को स्वास्तिक चिन्ह देकर सम्पूर्ण जगत के कल्याण की कामना की गयी। सत्र के अंत में संगोष्ठी के **संयोजक डॉ0 राजीव यादव** ने सभाकक्ष में उपस्तिथ समस्त अतिथियों, गणमान्य व्यक्तियों, प्रतिभागियों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों, छात्र–छात्रायों और प्रत्रकार बंधुयों के प्रति आभार व्यक्त किया। समापन सत्र में मंच का कुशल **संचालन डॉ0 रश्मि अग्रवाल** और **डॉ0 रोशिनी सिंह** द्वारा किया गया।

उक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी अपेक्षाकृत अपने उद्देश्यों में सफल रही। अवलोकनार्थ आपके समक्ष आख्या प्रेषित है।

आयोजन सचिव	**संयोजक**	**प्राचार्य**
डॉ0 जय प्रकाश वर्मा,	डॉ0 राजीव यादव,	प्रो0 अनुराधा तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–अर्थशास्त्र	असिस्टेन्ट प्रोफेसर–अंग्रेजी	

संगोष्ठी में श्रद्धेय अटल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण उद्बोधन

"आदरणीय अटल जी भारतीय राजनीति के मनस्वी लोकप्रिय राजनेता थे जो अपने उदारता, मनुष्यता प्रेरक राष्ट्रप्रेम और कवि हृदय के लिये हमारे मन चिरातन तक स्थापित रहेंगे। उनका हिन्दी भाषा के प्रति लगाव, वाकपटुता, हास्योत्पादक आतिथ्य भाव उन्हें अद्वितीय बनाता है।" –श्री योगेन्द्र उपाध्याय, मा0 मंत्री, उच्च शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, उ0प्र0

"श्रद्धेय अटल जी द्वारा स्थापित राष्ट्रसेवा का वटवृक्ष आज प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र भाई मोदी के नेतृत्व में पूर्णरूपेण फलित हो चुका है और भारत पुनः विश्वगुरू बनने की ओर अग्रसर है, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक तौर पर भारत सम्पूर्ण विश्व का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। देश आदरणीय अटल जी के प्रति हमेंशा ऋणी रहेगा।"–डॉ0 नीरज बोरा, विधायक, लखनऊ उत्तर और समाजसेवी शिक्षाविद

"भारत के समावेशी विकास की जो राह नयी शिक्षा नीति–2020 द्वारा प्रशस्त हुयी है उसकी शुरूआत आदरणीय अटल जी के हाथों हुई थी। भारत में परमाणु परीक्षण कर, सड़कों का चहुंमुखी विकास कर और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का सशक्त समृद्ध बीज बो कर जनजागृति का शंखनाद करने के कारण अटल जी को इतिहास में सदैव उत्कृष्ठ स्थान प्राप्त होगा।" –प्रो0 आलोक कुमार राय, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय

"श्रद्धेय अटल जी का सम्पूर्ण जीवन असीम त्याग, तप और संघर्ष का रहा है। उन्होंने श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचार हिन्दू राष्ट्रवाद और पं0 दीन दयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के सिद्धान्त से प्रेरित होकर राष्ट्र को राजनीति के मानदण्डों से सदैव उपर रखा। उनके सपनों को साकार रूप देकर हम उनको सच्ची श्रद्धाजंलि दे सकते हैं।" –प्रो0 विजय कर्ण, विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग, नव–नालंदा विश्वविद्यालय, बिहार

"परमश्रद्धेय अटल जी अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे। स्नेह लगाव अनुराग के साक्षात प्रतिमान थे। उनके लिये सब बराबर थे। वह किसी स्थिति में अपनेपन से किसी को भी गले लगा सकते थे। उनके साथ हुयी मेरी मुलाकात मुझे आज भी रोमांचित करती है। लखनऊ जैसे उनके रगों में बसता था। वह लड़कियों की शिक्षा के लिये सदैव प्रयासरत रहे। वह एक राजनेता व कवि के रूप में हम सब के लिये प्रेरणास्रोत रहेंगें।" –प्रो0 अनुराधा तिवारी, प्राचार्य, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राज0 महिला महाविद्यालय

"अटल जी हम सभी के लिये अनुकरणीय हैं और इतिहास में उनका नाम दूरदर्शी राजनेता, मर्मस्पर्शी कवि और सर्वमान्य जनजायक के रूप में स्वर्णिम अक्षरों में उद्धृत किया जायेगा। जीवन में उनके द्वारा किये गये कार्यों का एक छोटा अंश भी अगर कर सके तो हम सब के लिये गौरव के क्षण होंगें।" –श्री महेंद्र सिंह, पूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, उ0प्र0 व मा0 सदस्य, विधान परिषद, उ0प्र0

"अटल जी ने एक राष्ट्रवादी राजनेता के रूप में जिस मार्ग को दिखाया उसका अनुसरण करके ही भारत सच्चे अर्थों में मुक्त हुआ है और युवा शक्ति अपने आत्मबल से भारत को विश्वपटल पर स्थापित कर सकता है।" – श्री घनश्याम शाही, मुख्य सचेतक, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

"आदरणीय अटल जी एक दूरदर्शी आर्थिक चिंतक थे। अटल जी ने भारतीय आर्थिक सुधारों और संरचनात्मक विकास को नवीन दिशा दिखाने का कार्य किया था। वह न केवल कुशल प्रशासक थे वरन कठोर कदम उठाने वाले अर्थव्यवस्था मर्मज्ञ भी थे।" – प्रो0 मनोज अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

"अटल बिहारी वाजपेयी आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि उन्होंने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और सर्व शिक्षा अभियान जैसे अर्थव्यवस्था में बुनियादी ढांचे और निवेश को बढ़ावा देकर भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की थी।" – डॉ0 विनीत कुमार श्रीवास्तव, निदेशक, अर्थशास्त्र और नीति अनुसंधान विभाग, आर0बी0आई0, मुम्बई

"अटल जी एक युगदृष्टा राजनेता, भारतीय इतिहास व संस्कृति की समझ रखने वाला जननेता थे। कई बार वह विश्वपटल पर एक सशक्त राजनेता के तौर अपना प्रभाव छोड़ते दिखते हैं।" –डॉ0 सनोबर हैदर, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ

"राष्ट्र मात्र कोई भौगोलिक इकाई नही बल्कि वह जनमानस की आत्मचेतना होती है जो विविधताओं में अपना सर्वोच्च शिखर प्राप्त करती है। अटल जी ने भारत की इसी आत्म गौरव को जागृत करने प्रयास जीवन पर्यन्त किया।" –प्रो0 बृजेन्द्र पाण्डेय, राजनीति विमाग, विद्यान्त पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ

"राष्ट्र की परिकल्पना नयी शिक्षा नीति–2022 में कही सार्थक ढ़ग स्पष्ट होती है जो अटल जी के प्रधानमंत्री काल में विभिन्न योजनाओं में परिलक्षित होती है, विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में।" –प्रो0 दीपक कुमार सिंह, अंग्रेजी विभाग, डी0ए0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ

"अटल जी मुखर वक्ता, कुशल प्रशासक और एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण के पक्षधर थे। वह केवल अपने देश में ही आन्तरिक शान्ति नही चाहते थे बल्कि अपने पड़ोसी देश में सम्पन्नता के भी समर्थक थे क्योंकि यही समावेशी विकास है।" –डॉ0 शिखा चौहान, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

"अटल जी एक सच्चे राजनेता थे क्योंकि उनके लिये राष्ट्र ही शाश्वत सत्य था। राजनीति में शुचिता के प्रबल हिमायती थे इसीलिये सत्ता को बचाने के लिये वह चिमटे से भी गलत संख्याबल छूना नही चाहते थे। यह परम्परा स्थापित करना भारतीय राजनीति के प्रति सार्थक योगदान था।" –प्रो0 मंजुला उपाध्याय, प्राचार्य, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ

"भारतीय पौराणिक ग्रन्थों में राष्ट्र व देश में स्पष्ट अन्तर देखने को मिलता है, देश भौगोलिक सत्य का परिचायक होता है तो राष्ट्र सांस्कृतिक व आध्यात्मिक आत्मचेतना का द्योतक होता है।" –डॉ0 सत्यकेतु, संस्कृत व प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

"अटल जी किसी भी राष्ट्र के विकास हेतु वैज्ञानिक उत्थान को उतना ही आवश्यक मानते थे जितना आध्यात्मिक उन्नति को क्योंकि वह मानव कल्याण को किसी भी राष्ट्र के वैज्ञानिक विकास का अंतिम लक्ष्य मानते थे।" –डॉ0 शरद कुमार वैश्य, एसोसिएट प्रोफेसर, एन0एस0सी0बी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ

"अटल जी राजनीति को मानवसेवा का सशक्त माध्यम मानते थे। वह काव्य रचना में भी राष्ट्रप्रेम को सर्वोपरि रखते थे। उन्होंने अपने जीवन को सार्थक रूप देते हुये आजीवन राष्ट्रसेवा की।" –डॉ0 जान्हवी ओझा, असिस्टेंट प्रोफेसर, कालिन्दी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

"अटल जी यह मानते थे कि राष्ट्र की प्रगति के लिए तकनीक का लैब से लैंड तक पहुंचना आवश्यक है इसीलिये उन्होंने तमाम विरोध होने के बावजूद मानवकल्याण के लिये परमाणु परीक्षण किया और उसका पूर्ण समर्थन किया।" –डॉ0 आलोक सिंह, शहीद राजगुरु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

"अटल जी की आर्थिक नीतियों ने राष्ट्र के चहुंमुखी विकास में अत्यंत सार्थक भूमिका अदा की जिसके लिये सम्पूर्ण देश उनका सदैव आभारी रहेगा।" –*प्रो0 सी0एस0 वर्मा, गिरि इंस्टिटयूट ऑफ डेवलपमेन्ट स्टडीज, लखनऊ*

"अटल जी अपनी कविताओं का विस्तार बहुआयामी तरीके से करते हैं जिसमें वह परिस्थितियों का सम्यक मूल्यांकन करते जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं, उनके लिये राष्ट्रहित सर्वोपरि था जिसके लिए उन्होंने राजनीति का रास्ता चुना था, वह भाव सदैव उनकी कविताओं में दिखता है।" –डॉ0 उमा सिंह, संस्कृत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ

"अटल जी एक वाकपटु व्यवहारकुशल मंचीय कवि थे जो प्रयेत्क परिस्थिति में हास्य व व्यंग के माध्यम से अपने वक्तव्य को प्रभावशाली बना सकते थे। एक कवि के रूप में वह हिन्दी कविता में अपना एक अलग स्थान रखते थे।" –डॉ0 हर्ष मणि सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, आई0एस0पी0जी0 कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

"अटल जी अपनी कविताओं में राष्ट्रप्रेम की अनूठी यात्रा ही नही करते बल्कि अपनी व्यक्तिगत मनोदशा को बड़ी सहजता के साथ अभिव्यक्त करते हैं वह अपनी सफलता, असफलता, खुशी, निराशा को सहज तरीके से अभिव्यक्त करते हैं।" –डॉ0 राघवेन्द्र मिश्र, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ

"भारत रत्न अटल जी ने राष्ट्र सेवा के लिये सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया जिसके लिये समस्त भारतवासियों को उनके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिये। उन्होंने अपने प्रधानमंत्री काल में जो दृढ़ निर्णय लिये उसका प्रतिफल आज दिखता है।" –डॉ0 जय प्रकाश वर्मा, आयोजन सचिव

"भारत रत्न श्रद्धेय अटल जी का जीवन काल एक सच्चे राष्ट्रवादी जननायक की संघर्ष–यात्रा के समान है। उनके द्वारा किये गये कार्यों ने देश का गौरव सदैव बढ़ाया। आदरणीय अटल जी के व्यक्तित्व अ कृतित्व पर आधारित यह संगोष्ठी भारतीय इतिहास के पुर्नलेखन का एक लघुप्रयास है जिससे भारतीय वैचारिकी का वैविध्य और अधिक परिष्कृत और सार्थक हो सके।" –डॉ0 राजीव यादव, संयोजक

महत्वपूर्ण लिंक

संगोष्ठी पंजीकरण लिंक :	**https://seminar.nscbonline.in/**
संगोष्ठी ई–मेल आई0डी0:	**netajiseminar2022@gmail.com**
संगोष्ठी वीडियो व फोटो लिंक:	**https://drive.google.com/drive/folders/1Jwa4pWwsLR1R3-yVQSsRAD0SqDyOIWNE?usp=sharing**
संगोष्ठी फेसबुक लाइव लिंक व ऑनलाइन प्रसार:	**https://www.voiceofcapital.page/2022/09/College-realising-Atal-jis-dreams---Yogendra-Upadhyay.html** **https://m.facebook.com/story.php?story_fbid** **https://www.voiceofcapital.page/2022/09/...-And-when-the-former-minister-made-an-amazing-calculation-of-25-years-of-college-from-year-to-second.html** **https://www.voiceofcapital.page/2022/09/No-student-should-have-inferiority-complex---Prof.-Anuradha-Tiwari.html**
यूट्यूब वीडियो लिंक:	**https://youtu.be/Bht6WKv5PO8** **https://youtu.be/DauGVeUxkSc**

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24–25 सितम्बर, 2022)

उद्घाटन सत्र

bon

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24–25 सितम्बर, 2022)

उद्घाटन सत्र

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24 सितम्बर, 2022 2:00–3:30 बजे)

प्रथम तकनीकी सत्र

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24 सितम्बर, 2022, 3:30–5:00 बजे)

द्वितीय तकनीकी सत्र

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(25 सितम्बर, 2022 10:00–11:30 बजे)

तृतीय तकनीकी सत्र

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(25 सितम्बर, 2022, 11:30–1:00 बजे)

चतुर्थ तकनीकी सत्र

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(25 सितम्बर, 2022, 02:00 बजे से)

समापन सत्र

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

''भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत''

(25 सितम्बर, 2022, 02:00 बजे से)

समापन सत्र

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24–25 सितम्बर, 2022)

अखबारों की सुर्खियों में

'पं. दीनदयाल की विचारधारा के पोषक थे अटल'

'प्रधानमंत्री के पद से भी बड़ा अटल जी का कद'

■ एनबीटी, लखनऊ : अटल वास्तव में विश्व राजनीति की अमूल्य धरोहर थे। वो सच्चे अर्थों में दीन दयाल उपाध्याय की विचारधारा के पोषक थे। वास्तव में उनका कद प्रधानमंत्री के पद से भी बड़ा था। यह बातें उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने कहीं। वह शनिवार को नेताजी सुभाष चंद्र बोस राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 'भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेई मानवता राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजई अग्रदूत' विषय पर हुई दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। इस मौके पर एलयू कुलपति प्रो. आलोक राय, विधायक डॉ. नीरज बोरा भी मौजूद रहे।

द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयीः मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत"

(24–25 सितम्बर, 2022)

अखबारों की सुर्खियों में

अटल राजनीति के अमूल्य धरोहर: योगेन्द्र

रजत जयंती

ग्लोबल

अटल जी थे अजातशत्रु : योगेन्द्र उपाध्याय

कैनविज टाइम्स — लखनऊ

अटल जी का व्यक्तित्व चुम्बकीय था : अनुराधा

'दूरदृष्टा थे अटल बिहारी वाजपेयी'

अलीगंज के नेताजी सुभाष चंद्र बोस राष्ट्रीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय के रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी–मानवता, राष्ट्रवाद एवं राजनीति के कालजयी अग्रदूत विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन रविवार को हुआ। समापन अवसर के मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री और विधान परिषद सदस्य डा. महेंद्र सिंह ने कहा कि अटल जी दूर दृष्टा थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में नालंदा विवि में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष तथा भाऊराव देवरस से जुड़े प्रोफेसर विजय कर्ण ने अटल जी के साथ ही पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती के अवसर पर उनके विचारों को साझा किया।

शहर का दर्पण हिंदी साप्ताहिक

नेताजी सुभाष चंद्र बोस राष्ट्रीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय में दो दिवसीय संगोष्ठी का हुआ समापन

नगर निकाय चुनाव में महंगाई का प्रत्याशियों की खर्च सीमा होगी

योगी सरकार का नया सख्त आदेश

सर्वोदय-ग्रामोदय के स्वरूप थे अटल : डॉ. महेंद्र सिंह

नेताजी सुभाष चंद्र बोस राष्ट्रीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन